B.A. History Hon's, Part-II

Paper: III, Unit: I, Date: 28.07.2020

Session: तुर्कों के आक्रमण के समय भारत की राजनीतिक दशा

सम्राट हर्षवर्द्धन की मृत्यु के पश्चात् भारत की राजनीतिक एकता छिन्न-भिन्न हो चुकी थी। राजपूत काल के राजाओं ने अपना शान-शौकत और दिखावे को अधिक महत्व दिया और उस समय में ऐसा सम्राट नहीं हुआ जो उत्तरी भारत की राजनीतिक एकता को सूत्र में बाँध सकता था। तुर्कों के आक्रमण की राजनीतिक निम्न प्रकार थी—

कश्मीर: कश्मीर पर मौर्य और कुषाणों ने राज्य किया था। छठी शताब्दी में हूण सरदार मिहिरकुल ने अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया था। 9वीं शताब्दी तक करकोट वंश का शासन रहा। इस वंश में अवंति-वर्मन और शंकर वर्मन नामक दो महान शासक हुए। सन 1339 ई० के लगभग, शाहमीर नामक एक स्थानीय मुसलमान ने कश्मीर में शासन स्थापित कर लिया।

नेपाल: 7वीं शताब्दी में नेपाल तिब्बत राज्य के अन्तर्गत हो गया था, परन्तु आठवीं शताब्दी में पुनः स्वतंत्र हो गया। सन् 479 ई० में एक नए राजवंश की स्थापना हुई। प्रो० एस० आर० शर्मा के अनुसार "नेपाल पर मुसलमानों का पहला आक्रमण 14वीं शताब्दी में तुगलक सुल्तानों के समय हुआ जिसके परिणामस्वरूप मुसलमानों ने नेपाल के तिरहुत नामक प्रदेश को अपने अधीन कर लिया और राजधानी शमदाओं को घेर लिया।"

आसाम: सम्राट समुद्रगुप्त ने अपने राज्य में नेपाल को मिला लिया था। सम्राट हर्ष के काल में भास्कर वर्मन का राज्य था। हर्ष की मृत्यु के उपरांत स्वतंत्र राज्य बन गया और 13वीं शताब्दी में आहोमों के एक नवीन वंश की स्थापना की।

कन्नौज: हर्ष की मृत्यु के पश्चात् कन्नौज का महत्व काफी कम हो गया था परन्तु आठवीं शताब्दी में यशोवर्मन नामक एक प्रतापी सम्राट हुआ। 750 ई० में कश्मीर के शासक ललितादित्य ने यशोवर्मन का वध करवा दिया और कन्नौज पर अधिकार कर लिया। ललितादित्य का शासन बहुत दिनों तक नहीं चला और 50 वर्ष तक कन्नौज में परिवर्तन होते रहे। 816 ई० में गुर्जर प्रतिहार वंश के नागभट्ट ने कन्नौज को जीतकर उसपर अपना अधिकार कर लिया। नागभट्ट ने 14 वर्ष तक कन्नौज पर राज्य किया और महाराजाधिराज की उपाधि धारण की। 833 ई० में उसकी मृत्यु हो गई। उसका उत्तराधिकारी रामचन्द्र केवल दो वर्ष तक रहा। 835 ई० में मिहिर भोज राजा बना। उसने बंगाल के शासक देवपाल की शक्ति को क्षीण कर दिया और दक्षिण के राष्ट्रकूटों को पराजित किया।

मिहिरभोज के पश्चात् महेन्द्रपाल भी योग्य पिता का योग्य पुत्र था। उसने भी लगभग 20 वर्ष तक राज्य किया और कन्नौज को फिर से ऊँचा उठाया। परन्तु उसकी मृत्यु के पश्चात् राज्य का विघटन शुरू हो गया। उसके उत्तराधिकारी महिपाल देवपाल और राजपाल आदि थे। 1060 ई० के लगभग कन्नौज के शासन की बागडोर प्रतिहार वंश के हाथ में चली गई। इस वंश के राजाओं में चन्द्रदेव, मदनपाल, विजयचन्द्र और जयचन्द्र आदि प्रसिद्ध हैं। इन राजाओं ने पालवंश, मालवा और गुजरात के शासकों के साथ युद्ध किया। इस वंश का सम्राट जयचन्द्र था जिसे पराजित कर मोहम्मद गोरी ने कन्नौज पर अधिकार किया था, फिर भी कन्नौज का पतन मुसलमानों के हाथों हुआ।

मालवा: मालवा राज्य मध्य भारत में था। हर्षवर्द्धन के शासनकाल में कन्नौज राज्य में शामिल हो गया। 816 और 908 ई० के मध्य मालवा पर कन्नौज के प्रतिहारों का शासन रहा। 908 ई० में जब प्रतिहारों का पतन प्रारंभ हुआ तो उसकी कमजोरी का लाभ उठाकर परमार वंश के स्वतंत्र शासन स्थापित कर लिया। भोज के दरबार में पण्डित धनञ्जय, पद्मगुप्त आदि विद्वान रहते थे। उस काल में साहित्य और

साहित्य-प्रेमियों के मध्य भोज का नाम सर्वोपरि है। कथनानुसार उसने अपने राज्य में 104 मंदिरों का निर्माण करवाया था। वह एक महान विजेता और शासक ही नहीं बल्कि संस्कृत का महान उपासक था। गुजरात तथा चेदि शासकों के द्वारा उनको बहुत अधिक क्षति उठानी पड़ी। अन्त में 1310 ई० में अलाउद्दीन ने अपने राज्य में मिला लिया।

गुजरात: आठवीं शताब्दी में गुजरात भी कन्नौज साम्राज्य में सम्मिलित था। दसवीं शताब्दी के मध्य जब प्रतिहारों और राष्ट्रकूटों की शक्ति क्षीण हो गई तो सोलंकी वंश के साहसी, युवक मूलराज ने गुजरात पर अपना अधिकार कर लिया। कहा जाता है कि उसने अपने समकालीन राजपूत राजाओं के साथ ही एक बार मोहम्मद गोरी को भी पराजित किया था। 995 ई० के लगभग उसकी मृत्यु हो गई। इसलिए 1007 ई० में इस वंश के शासन की बागडोर उसके हाथ से निकल गई। सोलंकी वंश का प्रतिभाशाली सम्राट कुमारपाल था। उसकी मृत्यु के पश्चात् गुजरात की दशा दिन-प्रतिदिन क्षीण होती गई। गुजरात में बघेल वंश के शासन की स्थापना हुई। अंतिम सम्राट कर्णदेव को पराजित करके अलाउद्दीन के सेनापतियों ने गुजरात पर अधिकार कर लिया।

अजमेर: अजमेर में सांभर के चौहानों का राज्य था। चौहानों के विषय में डा० महोदय ने लिखा है कि – "Rajputs were the most valiant races." अजमेर राज्य का एक भाग था। चौहान वंश का सबसे पहला शासक बीसलदेव चौहान था। उसने मुसलमानों से युद्ध किया, प्रतिहारों से दिल्ली छीनी और अपने राज्य की सीमा हिमालय के शिवालिक तक विस्तार की। पृथ्वीराज ने तराइन के युद्ध में 1191 ई० में मोहम्मद गोरी को पराजित किया।

बुन्देलखण्ड: कन्नौज के कुछ दक्षिण की ओर बुन्देलखण्ड में चन्देलों का राज्य था। पहले चन्देल कन्नौज के राजपूतों के अधीन थे, परन्तु 800 ई० के लगभग नन्नुक नामक एक राजपूत सरदार ने अपने को स्वतंत्र घोषित किया। तत्पश्चात् 1203 ई० में कुतुबुद्दीन ने कालिंजर और महोबा पर अपना अधिकार कर लिया और बुन्देलखण्ड उसके राज्य में सम्मिलित हो गया।

मेवाड़: मेवाड़ में गहलौत वंश का शासक था। इस वंश का संस्थापक बापारावल था। मोहम्मद-बिन-कासिम के आक्रमण के समय बापारावल बड़ी वीरता से लड़ा था। फलस्वरूप उसे 730 ई० में मेवाड़ प्राप्त हुआ था।

बिहार तथा बंगाल: हर्षवर्धन का राज्य बंगाल तक फैला हुआ था। उसकी मृत्यु के उपरान्त से आठवीं शताब्दी तक का बंगाल का इतिहास अन्धकार के गर्त में था। इस वंश का शासक देवपाल सिंहासनारूढ़ हुआ। उसने आसाम और कलिंग पर भी अपना अधिकार जमा लिया। देवपाल के मृत्यु के पश्चात् पालवंश पतन की ओर अग्रसर होता गया और 12वीं शताब्दी वंश [illegible] छीननी पड़ी।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि मुसलमानों के आक्रमण के समय समस्त उत्तरी भारत अनेक छोटे-छोटे राज्यों में बँटा हुआ था और सभी राज्यों में अराजकता की स्थिति थी। इसी वातावरण के मध्य तुर्कों ने भारत पर आक्रमण किया और देश की राजनीतिक के कारण भारतीयों को धूल चटाने में सफल हुए।

□ डा० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग